ISSN 0975-850X
(Impact Factor 4.375)

सम्पादक :
डॉ. शगुफ़्ता नियाज़

अनुसंधान

(त्रैमासिक शोध पत्रिका)

Peer Reviewed International Journal

कश्मीर पर केन्द्रित उपन्यास : कथा आलोचना

ISSN 0975-850X

अनुसंधान शोध त्रैमासिक

अप्रैल 2022-सितम्बर 2022 (संयुक्तांक)

सम्पादक
डॉ. शगुफ़्ता नियाज़

सलाहकार सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ खान

परामर्श मण्डल
प्रो. रामकली सराफ(बी.एच.यू.)
कादम्बरी मेहरा(यू.के.)

सम्पादन सहयोग
नदीम अहमद नदीम, बीकानेर

इस अंक का मूल्य–170/

सम्पादकीय कार्यालय :
205 फेज-1, ओहद रेजीडेंसी, नियर पान वाली कोठी, दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002, *vangmaya@gmail.com, Mob- 7007606806*

सहयोग राशि :
द्विवार्षिक शुल्क व्यक्तिगत/संस्थाओं के लिए : 800/–

13. कश्मीरी शिकारा परिवार की संत्रास व पीड़ा का यथार्थ चित्रण : 'काँपता हुआ दरिया'/106
डॉ. प्रीति सिंह
14. राष्ट्रीय अस्मिता पर दारुण आख्यान : 'कश्मीर की बेटी'/120
डॉ. जिन्दर सिंह मुंडा
15. कश्मीर की साझा विरासत का स्वप्न और यथार्थ : 'एक कोई था कहीं नहीं-सा'/126
योगेन्द्र सिंह
16. घाटी : अपनी वजूद की तलाश में.../137
डॉ. रूबी एलसा जेकब
17. तीन पीढ़ियों की याद और स्त्री जीवन की त्रासदी का सजीव चित्रण-'यहाँ वितस्ता बहती है'/149
डॉ. सुनील कुमार यादव
18. अतीत से वर्तमान की दूरियों को नापता उपन्यास 'कश्मीर 370 किलोमीटर'/156
डॉ. करिश्मा पठाण
19. भारतीय संवैधानिक मूल्यों को ध्वस्त करती राजनीतिक तानाशाही : 'नाकाबंदी'/161
डॉ. भगवान गव्हाडे

कश्मीरी शिकारा परिवार की संत्रास व पीड़ा का यथार्थ चित्रण : काँपता हुआ दरिया

डॉ. प्रीति सिंह

मोहन राकेश आधुनिक नाट्य-साहित्य को नई दिशा देने वाले प्रतिभा संपन्न साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध है। मोहन राकेश का साहित्य विशेषतः मध्यवर्गीय समाज के मनुष्य की समस्याओं, संघर्षों, अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देने में पूर्ण रूप से सक्षम रहा है। मोहन राकेश ने कई उपन्यासों की रचना की, जिसमें अंतराल, अँधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल एवं नीली रोशनी की बाँहें प्रमुख है। उनके उपन्यासों में आधुनिक युग के स्त्री-पुरुष के संबंधों, विशेषत- दांपत्य जीवन में आने वाली विसंगतियों और विडंबनाओं के बीच व्यक्ति-व्यक्ति के संबंधों में तनाव एवं बिखराव आदि का चित्रण करने में उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हुई है।

मध्यम वर्ग के मानवीय संबंधों की पीड़ा एवं द्वंद्व को लेखक की प्रत्येक रचना में देखा जा सकता है। उनके उपन्यास आधुनिक मानव संबंध की यथार्थता को नए संदर्भों में टटोलने की कोशिश करते हैं। उनके उपन्यासों की यही उपलब्धि है कि प्रत्येक वर्ग के पाठक को उपन्यास का कथानक अपने से जोड़ने में पूर्णतया समर्थ रहता है। कहा जाए तो संबंधों के अधूरे पंख और आपसी संप्रेषणीयता के टूटते सूत्रों के बीच अर्थहीन होते जा रहे व्यक्ति का अकेलापन, संत्रास और सफल ज़िंदगी के लिए सार्थक संबंधों की खोज की छटपटाहट है और अपने अस्तित्व, अस्मिता को साबित करने की लालसा है। जिससे संबंध और अधिक उलझते रहते हैं एवं मनुष्य बिखरता रहता है। साथ ही सार्थक संदर्भों की खोज अवरुद्ध स्थितियों में एक अनुगूँज छोड़ जाती है। अगर कहा जाए तो सत्य यही है कि उनका साहित्य प्रत्येक व्यक्ति की मार्मिक अनुभूतियों, उनके संघर्षों एवं अंतर्द्वंद्व को उद्‌घाटित करता है।

मोहन राकेश कृत 'काँपता हुआ दरिया' उपन्यास कुछ ऐसी ही मार्मिक अनुभूतियों, संत्रास, पीड़ा को उद्‌घाटित करता है। उपन्यास में मोहन राकेश के व्यक्तिगत जीवन अनुभव के माध्यम से कश्मीर के हाँजी परिवार की कथा को प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास की पूर्व भूमि में मोहन राकेश लिखते हैं- ''खालसा और उसके परिवार से मेरा परिचय सन् 1954 में हुआ। तब मैं एक तरह से पहली बार कश्मीर गया था। एक